अगर किसी अन्य आत्मा के अवगुण की स्मृति प्रवेश करे और ज्ञान सूर्य की रोशनी से आत्मा को वंचित करे तो क्या यह छोटी बात है? यह ग्रहण तो उससे भी अति खतरनाक है और आपदा का सूचक भी है।

अवगुण दर्शन से विकारों का विस्फोट

सबसे बड़ी आपदा तो यह है कि संगमयुग का अति अमूल्य खज़ाना समय, जो परचिंतन में व्यर्थ गया, उसमें से एक क्षण भी हमें वापस मिलने वाला नहीं है। दूसरी बात है, अवगुण देखना, यह विकार तो नहीं है लेकिन विकारों का जनक है। जैसे डाइनामाइट (Dynamite) का विस्फोट करने के लिए डिटोनेटर (Detonator) का इस्तेमाल किया जाता है। हम जिसको चिंगारी दिखाते हैं वह तो सिर्फ एक बत्ती है लेकिन आगे जाकर कुछ समय के बाद बारूद का विस्फोट कर देती है। यह विस्फोट चट्टानों को भी तोड़ देता है। वैसे ही अवगुण देखना भी एक बत्ती है जो समय आने पर विकारों के विस्फोट का कारण बन जाती है, विशेषकर क्रोध और अहंकार के विस्फोट का कारण। ऐसे भी कई उदाहरण हैं कि वे दूसरों के अवगुण देखकर खुद साधना के मार्ग से हट गए और फिर से विकारों के पंजे में फँसकर चकनाचूर हो गए। औरों को ऐसी नज़र से देखना माना ज्ञानसूर्य से विपरीत बुद्धि बनकर, सारे कल्प के लिए उनसे मिलने वाले सुख, शान्ति और संपत्ति के वर्से को लकीर लगा देना।

इस कमज़ोरी से मुक्ति कैसे पाएँ?

ज्ञानसागर शिवपिता ने बहुत ही सरल युक्ति समझाई है, मीठे बच्चे, हर एक की विशेषताओं को ही देखने का चश्मा पहनो। यह चश्मा पहनना अर्थात् हर एक की विशेषता को पहचानना, वर्णन करना, उसको अपने अंदर धारण करना और साथ-साथ अवगुण को देखते हुए भी नहीं देखना। यह चश्मा हमारी जेब में पहले से ही है। यह मानव को जन्मजात प्राप्त ईश्वरीय वरदान है और आश्चर्य की बात यह है कि दिन में कई बार हम इसको पहनते भी हैं व उतारते भी हैं।

मान लीजिए, हम कुछ प्रसिद्ध शहरों के दर्शनीय स्थलों को देखने जा रहे हैं। हमें मालूम है कि वहाँ ही आस-पास झोपड़पट्टियाँ, मांस-मदिरा का बाज़ार, कसाईखाना आदि भी हैं लेकिन न हम उनके बारे में सोचेंगे, न देखेंगे, न वहाँ जाकर परेशान होंगे।

जब हम गुलाब के फूलों का बगीचा देखने गए, फूलों से जुड़े काँटों को देखकर हमारे मन में नफरत पैदा हुई क्या? क्या यह सोचा कि दोबारा नहीं आना? नहीं ना। आपकी नज़र में सिर्फ फूलों का सौन्दर्य और श्वास में उनकी खुशबू थी। वहाँ कांटे भी थे लेकिन विशेषता को देखने के चश्मे में वे दिखाई नहीं दिए।

अखबार में अश्लील कथाएँ, चित्र आदि भी होते हैं पर हम ज़रूरी खबर या काम में आने वाली जानकारी पर नज़र डालकर उसका लाभ ले लेते हैं।

हमारे में से अनेकों के नाम शेरसिंह, प्रतापसिंह आदि हैं। सर्वप्राणियों में श्रेष्ठ बुद्धिजीवी मानव ने, अपने से नीच, बुद्धिहीन, मांसाहारी, क्रूर प्राणी सिंह का नाम अपने साथ क्यों जोड़ा? क्योंकि उसके अवगुण को ना देख, विशेषता अर्थात् साहस और गंभीरता को ही देखा और स्वयं की शान बढ़ाने के लिए अपने नाम के साथ 'सिंह' जोड़ दिया।

इससे सिद्ध होता है कि शुद्ध-अशुद्ध दोनों परखकर, शुद्ध या प्रयोजनकारी को ही स्वीकार कर, अशुद्धि की तरफ ध्यान नहीं देना, यह कला हमारे पास पहले से ही है। लेकिन हम असफल इसलिए हो जाते